हिन्दी पखवाड़े के आयोजन के संबंध में रिपोर्ट

सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबंध संस्थान में इस वर्ष 01-14 सितंबर, 2010 तक हिन्दी पखवाड़ा आयोजित किया गया। पखवाड़े के दौरान विभिन्न संकाय सदस्यों की देखरेख में दस प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। हिन्दी टंकण, हिन्दी आशुलिपि, हिन्दी निबंध, श्रुतलेख व वर्तनी, स्लोगन, हिन्दी में टिप्पण व प्रारूप लेखन, प्रशासन तथा प्रशिक्षण शब्दावली, मल्टी टास्किंग स्टाफ के लिए सुलेख प्रतियोगिता तथा वर्ड चेन प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया । इस पखवाड़े के दौरान एक हिन्दी कार्यशाला का भी आयोजन किया गया जिसमें राजभाषा अधिनियम व नियमों की जानकारी दी गई । इस कार्यशाला में संस्थान के 16 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

14 सितंबर, 2010 को हिन्दी पखवाड़े के समापन एवं पुरस्कार वितरण समारोह में विदेश सेवा संस्थान के डीन डा. अजय चौधरी को मुख्य अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया । समारोह का शुभारम्भ सरस्वती वन्दना से किया गया । इसके पश्चात् संस्थान के संकाय सदस्य द्वारा गृह मंत्री, श्री पी चिदम्बरम का संदेश पढ़कर सुनाया गया । इसके बाद 'कविता पाठ प्रतियोगिता' का आयोजन किया गया । इसमें संस्थान के संकाय सदस्यों/स्टाफ के अलावा संस्थान में चल रहे एडीआर पाठ्यक्रम के प्रतिभागियों ने भाग लिया । एडीआर प्रतिभागियों द्वारा प्रस्तुत की गई तथा पुरस्कृत कविताओं की कुछ पंक्तियाँ इस प्रकार हैं:-

(1) ''हिंदी है मेरी भाषा, हिंदी है मेरी बोली''

गिरीराज के शिखर से,
गंगा की हर लहर से,
सागर के तुमुल स्वर से,
धरती के कण-कण में,
हिंदी ही है समाई,
हिंदी ही सबकी बोली,
हिंदी है मेरी भाषा,
हिंदी है मेरी बोली ।

(2) "दिल"

दिल का ऐसा दिल से नाता है
गैर भी अपना हो जाता है
दिल के दिल से रिश्ते जुड़ जाते
जो कभी हँसाते, कभी रूलाते
कभी दूरियाँ कम करते तो
कभी बीच की खाई बनाते
फिर क्या है ऐसा इस दिल में
आओ तुमको कथा सुनाते ।

संस्थान के एक कर्मचारी, श्री जितेन्द्र कुमार भारती द्वारा प्रस्तुत तथा पुरस्कार प्राप्त एक अन्य कविता के कुछ अंश प्रस्तुत किए जा रहे हैं:

"बड़ा महत्व है"

फिल्म में ऐक्टर का
खेत में ट्रैक्टर का
मैथ्स में फैक्टर का और
आईएसटीएम में डायरेक्टर का
बड़ा महत्व है ।

टीम सेलेक्शन में बीसीसीआई का
जांच में सीबीआई का
बैंक में आरबीआई का और
ऑफिस में आरटीआई का
बड़ा महत्व है ।

इस प्रकार सभी प्रतिभागियों ने इस समारोह को भव्यता प्रदान की । इस संस्थान के तीन संकाय सदस्य नामश: उप निदेशक, श्री नफे सिंह, सहायक निदेशक, श्री योगेश द्विवेदी व सहायक निदेशक श्रीमती नमिता मलिक इस प्रतियोगिता के निर्णायक थे ।

इसके पश्चात् मुख्य अतिथि डा. अजय चौधरी ने अपने कर-कमलों से विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार और प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए । संस्थान में लागू राजभाषा प्रोत्साहन योजना के अंतर्गत 10 पुरस्कार प्रदान किए गए ।

पुरस्कार वितरण के बाद डा. अजय चौधरी ने सभा को संबोधित किया। उन्होंने सचिवालय प्रशिक्षण तथा प्रबंध संस्थान को हिंदी पखवाड़े के पुरस्कार वितरण एवं समापन समारोह के आयोजन पर बधाई दी । उन्होंने कहा कि इस संस्थान में इस कार्यक्रम के आयोजन में और हिंदी से संबंधित क्षेत्रों में हुई प्रगति के लिए सारा श्रेय संस्थान के निदेशक श्री ख़्वाजा एम. शाहिद को जाता है। श्री चौधरी ने इस बात पर जोर देकर कहा कि हिंदी हमारी भाषा है, हमारे देश की भावना, हमारी राष्ट्रभाषा है। विदेशी भाषा से हमारा अस्तित्व नहीं बनता। अस्तित्व अपनी भाषा से ही बनता है। उन्होंने अपील की कि हम अपने दैनिक कार्यों में हिंदी का अधिकाधिक प्रयोग करें। उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी का प्रयोग बढ़ाने में इस संस्थान का काफी योगदान हो सकता है । यदि यहां आने वाले सभी लोगों को हिंदी का प्रशिक्षण दिया जाए तो सचिवालय का काफी कार्य हिंदी में हो सकता है । उन्होंने कहा कि वह उत्तर प्रदेश के निवासी हैं । 1960 तक वहां पर अधिकांश कार्य अंग्रेजी में ही होता था । तत्पश्चात् वहां की सरकार ने आदेश दिए कि अब समस्त कार्य हिंदी में ही होगा। परन्तु ऐसे नियम भी बनाए गए जिससे किसी को भी हिंदी अपनाने में कठिनाई न हो । सर्वप्रथम यदि कोई शब्द हिंदी में नहीं है तो उसे वैसे ही देवनागरी में लिखा जा सकता है । यहां पर श्री चौधरी ने बात की यूनिवर्सिटी, ऑटो जैसे शब्दों की । यह शब्द कविता पाठ प्रतियोगिता के दौरान एक प्रतिभागी द्वारा अपनी कविता में बोले गए थे जिन्हें श्री चौधरी जी ने बड़े ही अच्छे ढंग से स्पष्ट किया कि कैसे इन्हें देवनागरी में लिखकर हिंदी को सरल और सहज बनाया जा सकता है । इससे धीरे-धीरे लोगों में हिंदी को अपनाने का चलन बढ़ जाएगा । जो अधिकारी गैर हिंदी

भाषी प्रदेशों से आते हैं वे भी महीने–दो महीने के अंदर हिंदी सीख सकेंगे । उन्होंने यह भी कहा कि हिंदी को अपनाना कोई मुश्किल नहीं है । सिर्फ आपसी प्रयास की जरूरत है । इस दिशा में इस संस्थान का काफी महत्वपूर्ण योगदान हो सकता है । उन्होंने संस्थान के अधिकारियों और कर्मचारियों द्वारा पढ़ी गई कविताओं की प्रशंसा की और संस्थान में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना भी की । उन्होंने हिंदी को प्रोत्साहित करने और उसका प्रयोग बढ़ाने के लिए संस्थान को बधाई दी और भविष्य में भी हिंदी को इसी प्रकार बढ़ावा मिलता रहे यह कहकर उन्होंने अपना भाषण समाप्त किया ।

निदेशक महोदय ने अपने संबोधन के आरंभ में अपनी तरफ से और संस्थान के सदस्यों की ओर से समारोह के मुख्य अतिथि डा. अजय चौधरी का स्वागत करते हुए आभार प्रकट किया कि वह अपना बहुमूल्य समय निकाल कर संस्थान में आए और अपने शब्दों से सबको प्रोत्साहित किया । निदेशक महोदय ने कहा कि उनके इंस्टिट्यूट की तरफ से हर तरह की मदद मिलती रही है और इसके लिए संस्थान उनका आभारी है । तत्पश्चात् निदेशक महोदय ने सभी को हिंदी दिवस की बधाई दी । निदेशक महोदय ने माननीय गृहमंत्री जी के संदेश में से दो मुख्य अंशों पर प्रकाश डाला। उन्होंने माननीय गृहमंत्री श्री पी चिदम्बरम के संदेश में से सर्वप्रथम इस अंश पर बल दिया कि किस प्रकार सरल एवं सहज हिंदी को अपनाने से हिंदी का प्रचलन बढ़ाया जा सकता है। उन्होंने यूनिवर्सिटी, सेट्रल सेक्रेटेरियट जैसे प्रचलित शब्दों का प्रयोग करने के लिए कहा । आजकल हिंदी भाषा का वह रूप प्रचलित है जो कॉलेजों, रेस्टोरेंटों, सड़कों आदि पर बोली जा रही है । आज लोग हिंदी में एसएमएस कर रहे हैं परन्तु वह हिंदी रोमन में ही लिख रहे हैं । कोई भी भाषा हो जब तक उसमें लचक नहीं होगी, उसमें तरक्की नहीं होगी । ऑक्सफोर्ड डिक्शनरी का एक लाखवाँ और हाल ही में शामिल शब्द ‘जय हो’ है । 100 साल पहले जो अंग्रेजी लिखी जाती थी वह अंग्रेजी अब नहीं बोली जाती । निदेशक महोदय ने इंटरनेट, मोबाइल, एसएसएस से हिंदी को जोड़ने की जरूरत पर बल दिया ।

संदेश का दूसरा मुख्य अंश जिसका उन्होंने उल्लेख किया वह था संघ की राजभाषा नीति का आधार प्रेरणा एवं प्रोत्साहन है । प्रोत्साहन एवं प्रेरणा की नीति का प्रयोग करने पर ही दूसरों को इसमें शामिल किया जा सकता है तभी हिंदी आगे बढ़ेगी । उन्होंने सभी प्रतिभागियों को बधाई दी और कहा सिर्फ विजेताओं से कोई प्रतियोगिता या कार्यक्रम कामयाब नहीं होता बल्कि इसमें शामिल होने वालों से होता है । उन्होंने सहायक निदेशक (रा.भा.) तथा उनकी टीम को कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए बधाई दी तथा उनके कार्यो की प्रशंसा की । तत्पश्चात् उन्होंने जनवरी माह में संसदीय राजभाषा समिति द्वारा संस्थान के किए गए निरीक्षण के बारे में बताया । उन्होने कहा कि हमारे संस्थान से जो आंकड़े उनके सामने पेश किए गए उससे वे काफी प्रभावित हुए और जो रिपोर्ट दी गई उसको देखकर वे काफी खुश हुए थे । उन्होंने मुख्य अतिथि महोदय को बताया कि आईएसटीएम में प्रशिक्षण मिलीजुली भाषा में दिया जाता है तथा पाठ्यसामग्री भी द्विभाषी रूप में तैयार की जाती है । उन्होंने भाषा को कम्यूनिकेशन का जरिया मानते हुए कहा कि संस्थान में कम्यूनिकेशन की भाषा हिंदी है और जो यहां सिखाया जाता है उसका इस्तेमाल सेक्रेटेरियट में भी होता है। उन्होंने उम्मीद जताई कि आने वाले दिनों में आईएसटीएम में हिंदी का प्रचलन और बढ़ेगा । अंत में अगले वर्ष ज्यादा से ज्यादा कार्य हिंदी में करने की आशा के साथ उन्होंने इस कार्यक्रम का हिस्सा बनने के लिए सबको धन्यवाद दिया ।

अंत में संयुक्त निदेशक ने माननीय मुख्य अतिथि का आभार व्यक्त किया कि उन्होंने इस समारोह में आना स्वीकार किया तथा विजेता प्रतिभागियों को पुरस्कार प्रदान कर सबका सम्मान बढ़ाया । उन्होंने निदेशक महोदय का आभार व्यक्त किया जिनके मार्गदर्शन में हिन्दी पखवाड़े के कार्यक्रमों का सफलतापूर्वक आयोजन किया गया । उन्होंने हिन्दी पखवाड़े के दौरान आयोजित विभिन्न्न प्रतिभागियों के प्रभारी संकाय सदस्यों को उनके योगदान के लिए धन्यवाद दिया । उन्होंने, सहायक निदेशक (रा0भा0) व उनकी टीम को कार्यक्रम के सफल आयोजन के लिए बधाई दी ।

अंत में राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ ।

*****